मेरा 'क्लासरूम'

- अन्नू खरवार
एम.ए. समाजशास्त्र

मेरा महाविद्यालय बहुत बड़ा है। इसमें बहुत से क्लासरूम हैं। लेकिन लगाव सिर्फ एक से है। इस क्लासरूम में मैंने अपने जीवन का पाँच वर्ष बिताया है।

विद्यालय के दूसरे मंजिल पर स्थित समाजशास्त्र के क्लास रूम से मेरी बहुत सी यादें जुड़ी हैं। जो हमेशा मेरे साथ रहेंगी।

इस क्लासरूम में मैंने पढ़ने के साथ-साथ और भी बहुत कुछ सिखा। मानों मेरा व्यक्तित्व ही बदल गया हो। पहले मैं ऐसी नहीं थी। अकेले रहना पसंद करती थी।

दोस्त भी ऐसे मिले जिन्होंने खुलकर जीना सिखाया। उनके साथ पढ़ना, मस्तियाँ करना, ढेर सारी बातें करना, अच्छा लगता था। मानो अलग ही दुनियां में आ गये हों।

अध्यापक भी मित्र जैसे मिले, मैं उनकी विशेषज्ञता और अनुभव के लिए उन्हें धन्यवाद करती हूँ। बिना डरे उनमें जो मन में हों पूँछना। उन्होंने पढ़ाई के अलावा भी बहुत कुछ सिखाया। जीवन में आगे बढ़ने का कुछ कर दिखाने का हौसला दिया। उनके सौहार्दपूर्ण मार्गदर्शन और प्रोत्साहन ने मुझे प्रेरित किया। मैं उनका ह्दय से आभार व्यक्त करती हूँ। अब लगता है, हाँ मैं भी कर सकती हूँ।

पाँच साल हम सभी ने साथ बिताया। ऐसी सुनहरी यादें मिलीं जिसे अपने जीवन का सबसे अच्छा पल कहूंगी। ना मैंने पहले वैसे जिया है, ना भविष्य में वैसे रह पाऊँगी। ढेर सारी शरारतें करना, डाँट भी सुनी है, पर सीखा भी बहुत कुछ है।

अब भी अगर कभी जाओ देखो अपने क्लासरूम को तो लगता है, अभी कल की ही तो बात है। ब्रेंच पर अपना नाम देखकर लगता है, पूरे क्लासरूम पर केवल अधिकार हमारा है। जैसे दूसरा घर हो हमारा और दोस्त, अध्यापक इस घर के सदस्य।

अब तो बस सपना सा रह गया है, अब हम उस क्लासरूम के छात्र-छात्रायें नहीं। अब दूसरे बच्चो ने हमारी जगह ले ली है। अब वो पल लौट कर नहीं आयेगा।

अन्ततः यहीं कहूँगी, ये क्लासरूम हमारा है और हमेशा रहेगा।

***

सुभाष चन्द्र बोस

कैसे नमन करूँ मैं तुमको कैसे नमन करूँ,
नैतिकता आदर्श त्याग की हमने हंसी उड़ा दी,
देश प्रेम मानवता तज, दानवता खूब बढ़ा दी।
सहे निरन्तर क्लेष, कभी भी सुख का कौर न खाया,
पूरे हो अरमान ढह रहे फिर क्या तूने पाया,
जैसे अपने लोगों से ही, तूने धोखा खाया,
वैसे ही अब बेच रहे हैं, भारत माँ की काया।
सब कुछ देख रहे हो फिर भी तुम मौन पड़े हो,
आ सच्ची माँ के प्रिय सपूत, माँ तुझको आज चुकारे,
ऐ सुभाष फिर से आ कर दो, नैया आज किनारे,
अपरम्पार करूँ अभिनन्दन, वन्दन तुम्हें करूँ।
कैसे नमन करूँ मैं तुमको, कैसे नमन करूँ।।

जिंदगी

बेकार है वह फूल, जिसमें खुशबू न हो,
बेकार है वह जीवन, जिसका कोई उद्देश्य न हो,
बेकार है वह दोस्त जिसमें सच्चाई न हो,
बेकार है वह ताकत, जो कमजोरो के काम न आ सके
बेकार है सच्चाई, जो झूठ को मिटा न सके
बेकार है वह ज्ञान, जिसमें इंसानियत न हो।।

आत्म-विश्वास

जब मंजिल पाना है तो, काटो से क्या डरना,
आगे बढ़ते रहना और, डट कर मुकाबला करना
मंजिल दूर नहीं जब, ढूँढ संकल्प हो करना
हिमालय भी झुक जायेगा, जब दृढ़ ह्दय हो अपना,
जब मन में हो विश्वास तो, पत्थर भी मोंम बन जायेगा
जब हिम्मत हो अपने अंदर तो,
मंजिल खुद अपने चरण-चूमने आयेगा।।

१. 'कृष्णा'

ममता मौया

मेरी संवाद की झंकार सुन कृष्ण आ जाओ,
विरह वेदना की व्याकुलता सुन कृष्ण आ जाओ,
अनकहे अधरों की गाथा सुन कृष्णा आ जाओ,
कम्पन्न से परिपूर्ण हुदय की व्यथा सुन कृष्ण आ जाओ।।
छुट रही कृष्णा की साज कृष्ण आ जाओ,
लुट रही प्रिया की लाज कृष्ण आ जाओ,
है धरा पर चीर आज कृष्ण आ जाओ,
अब छोड़ सारे काम काज कृष्ण आ जाओ

**

२. मेरी पहली कलम ....

ममता मौर्या

नारी इस संसार में तेरे रूप हजार हैं,
तू उषा की किरण, तू करुणा का सागर ।।
ज्योति तेरे आँखो में, प्रीत तेरे मन में,
तू सुरभि के रूप में, तू ही प्रेम-लताओं में ?
श्वेत तेरा रुप है, प्राची तेरा नाम है,
अशोक स्तम्भ की भाँति खड़ी,
तू सबकी पहचान है।।
शिव का तू वरदान है, आलौकिक तेरा श्रृंगार है,
संध्या भी माँगे प्रकाश तुझसे,
रवि का तू भण्डार है
ममता से भरा वात्सल्य प्रेम तुझमें,
तू जीवन का आधार है ।।
नारी इस संसार में तेरे रूप हजार हैं

**

३. अब तो कुछ यूँ बदल सी गई ज़िंदगी

ममता मौर्या

वो शाम मस्तानी भी क्या खूब हुआ करती थी,
जो साथ बैठकर सब चाय की चुस्कियाँ लिया करते थे,
क्या अलग-अलग पसंद थे सबके,
किसी को अदरक वाली तो किसी को मीठी,
किसी को कड़वी तो किसी की फीकी,अलग अलग फरमाइश हुआ करती थी,
वो शाम मस्तानी भी क्या खूब हुआ करती थी ।।
अब तो कुछ यूँ बदल सी गई जिन्दगी
चाय के जैसे फट सी गयी जिन्दगी,
मीठे से मिठास गई, कडवे में कड़वाहट भर गई,
फीकी और भी फीकी सी हो गई,
अब तो कुछ यूँ बदल सी गई जिन्दगी?
वो दिन भी क्या खूब हुआ करता था,
रविवार का दिन हुआ करता था,
शाम के चार बजे का इंतजार हुआ करता था,
कौन सी मूवी आयेगी बड़ी बेसब्री के साथ ख्याल हुआ करता था,
वो दिन भी क्या खूब हुआ करता था ।।
जब ब्रेक का शुरुआत हुआ करता था,
तब फरमाइसों का आगाज़ हुआ करता था..
सुनो, उठो जाओ चाय ले जाओ ,
चाय के साथ पापड़ भी लाना,
पापड़ के साथ चिप्स भी लाना,
चिप्स में थोड़ा मसाला मिलाना,
लाते ही प्लेट झट से खाली हो जाया करता था,
वो दिन भी क्या खूब हुआ करता था..
अब वह दिन भी बीत गया, समय जैसे रुठ गया,
मौज मस्ती के साथ चाय पीना तो दूर,
दो पल साथ बिता ले यही काफी,
चाय जैसी उबल सी गई जिन्दगी,
अब तो कुछ यूँ बदल सी गई जिन्दगी?

**

गाँव

- आकांक्षा सिंह
एम.ए. प्रथम वर्ष

ये रास्ता जीवन के जीने के जूनुन तक जाएगा,
मेहनत के पसीने व खून चुक तक जाएगा।
अपनों की तलाश है तो,
यह हाइवे पकड़ो,गाँव का रास्ता है सुकुन तक जाएगा।
आंगन में लगे पेड़ की छांव को छोड़ा है,
जिनके पैरों में जन्नत है उन पाँव को छोड़ा है।
जिसे भी माना उस व्यक्ति से पूछो जाकर,
जिसने मजबूरी में अपना गाँव छोड़ा है।
देश धर्म पर मर मिटने का परिवेश नहीं बच पाएगा,
प्यार मोहब्बत जैसा शेष नहीं बच पाएगा।
खुब सजावो स्मार्ट सिटी लेकिन इतना याद रखो,
गाँव नहीं बच पाया तो देश नहीं बच पाएगा।
शहर बेहद जरूरी है मगर गाँव का क्या होगा,
इमारत बन गई पर पेड़ की छांव का क्या होगा।
शहर दौलत तो देता है पर बरकत नहीं देता,
शहर माला तो देता है पर माली नहीं,
शहर सपने तो देता है पर अपनापन नहीं देता।
शहर अभिमान देता है गाँव .... देता है,
शहर ज्ञान देता है गाँव बलिदान देता है।
शहर दुत्कार देता है गैर सत्कार देता है,
शहर बस कार देता है मगर गाँव संस्कार देता है।

बदलती दुनिया

- आकांक्षा सिंह
एम.ए. प्रथम वष

बदलती दुनिया के अपने रंग हैं,
लगता है जीना भी एक जंग है,
उदास आंखों में आंसू नहीं,
मानो दुनिया मतलब से संग है।
डिजिटल दुनिया में कहीं खो गये,
बोलने वाले यहाँ बेवकूफ हो गये,
रिश्तों के तराजू में तौला जाता है,
एक-दूजे से बस पैसों में बोला जाता है।
हर किसी की ऊंची उड़ान है,
मुट्ठी में मानो पूरा आसमान है,
गाँव मे वह सादगी रही नहीं,
जिसकी मुझे तलाश है।
भीड़ तो बहुत है इस दुनिया में,
मगर हर कोई अकेला है,
दिल तो सबके पास है यहाँ,
लगता है वह भी खोखला है।
बातें तो बहुत होती है,
पर सुनने वाला यहाँ कोई नहीं,
इस बदलती दुनिया में आज,
समझने वाला कोई नहीं।

***

आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।

- तन्नू खरवार
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।
''गम की बदली में चमकता एक सितारा है,
आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।
हमको गैरों का नहीं अपना सहारा है,
आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।
गर्दिशों से हार कर, ओ बैठने वाले
तुझको खबर क्या अपने पैरों में भी हैं छाले
पर नहीं रुकते, कि मंजिल ने पुकारा है,
आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।
ये कदम ऐसे, जो सागर पाट देते हैं,
ये वो धारायें हैं, जो पर्वत काट देते हैं,
स्वर्ग उन हाथों ने धरती पर उतारा है,
आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।
सच है डूबा सा है दिल, जब तक अंधेरा है,
इस रात के उस पर लेकिन फिर सवेरा है,
हर समंदर का कहीं पर तो किनारा है,
आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।।***

स्वतंत्रता

- आशा यादव
बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

न जाने कितने वीरों ने
अपनी जान गंवाई थी
तब जाकर मेरे भारत ने
सही स्वतंत्रता पाई थी।
ये धरती भी हमारी थी
आकाश हमारा था
पर ब्रिटिश के शासन में
कुछ भी न हमारा था।।
मंगल, भगत, आजाद
सबने लड़ी लड़ाई थी
तब जाकर मेरे भारत ने
सही स्वतंत्रता पाई थी।
एक समय था जब यह भारत
सोने की चिड़िया कहलाता था
यही देखकर इसे विदेशी
हर बार हथियाना चाहता था।।
अंग्रेज के छक्के छुड़ाकर
लक्ष्मीबाई ने जान गंवाई थी
तब जाकर मेरे भारत ने
सही स्वतंत्रता पाई थी।
अंग्रेज अगर यहाँ आए वो
उसमें भी कहीं तो कमी हमारी थी
कुछ अपनों के मन में ही
बस गई बड़ी गद्दारी थी।।

मेरा भी एक सपना था

- कंचन यादव
बी.ए. प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

मेरा भी एक सपना था
सपने में देखा एक बड़ा शहर में है घर अपना
चाँदनी रात थी
बड़े शहर में पढ़ाई करने की बात थी।
मेरा भी एक सपना था।
सपना था जो शाम में ढलते सूरज के साथ
ढल गया।
फिर क्या मेरी जिंदगी में अंधकार का आगमन हुआ।
मेरा भी एक सपना था।
बाहर पढ़ने का सपना टूट गया और आँसूओं
की बारिश में मेरा मन भींग गया।
मेरा भी एक सपना था।
दिन रात एक करकर मैंने वो सपना देखा था
जो कि पूरा न हो सका।
मेरा भी एक सपना था।
शायद उसका बिछड़ना ही मेरे नसीब में ही था
मैंने उस सुहाने पल को बेसबरी से इन्तजार
किया था जो एक पल में ही मोती के
माला जैसी टूट कर बिखर गया।
मेरा भी एक सपना था ।
मैं अपने सपने के बहुत करीब थी।
लेकिन मेरा बाहर जाना मेरे घरवालों को पसन्द नहीं आया
मेरा भी एक सपना था।
अब समय आ गया मुझे मेरा मन तो बावला था
जिसे समझा अपना वही निकला पराया।
मेरा भी एक सपना था।
अब तो सारी दुखों को लेकर जीना सीख लिया है मैंने।
लेकिन जब वो पल याद आता है तो मेरी
आँखें मानो सावन की घटा की जैसी भर आती है।
मेरा भी एक सपना था।
अब मैंने ठान लिया है यही रहकर कुछ बड़ा करना है।
मेरा भी एक सपना था।

***

कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

- निशा यादव

बी.ए. प्रथम वर्ष

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
नन्हीं चींटी जब दाना, लेकर चलती है,
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है,
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है,
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
असफलता एक चुनौती है स्वीकार करो
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करों
जब तक व सफल हो नींद चैन को त्यागों तुम
संघर्ष का मैदान छोड़कर मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती
गिरने से अपने आप को बार-बार बचाओं तुम
कुछ और भी कमी रह गई उसे सुधार कर जाओ तुम
मुट्ठी किसी की खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की कभी हार नहीं होती

***

शराब मत पीना

- ममता यादव

एम.ए. प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

जयपुर राज्य में एक गरीब हेमराज नाम का व्यक्ति रहा करता था। हेमराज एक शराबी व्यक्ति था। उसकी पत्नी कर्मावती एवं उसके पास तीन संतान थे। दो पुत्री एवं एक पुत्र था। बड़ी पुत्री का नाम गरिमा, छोटी पुत्री सुमन तथा पुत्र आलोक था। पिता के गरीबी एवं शराब अधिक पीने के कारण उस परिवार का भरण-पोषण भी ठीक से नहीं हो पाता था। पैसा के कमी के कारण गरिमा, सुमन और आलोक को शिक्षा की प्राप्ति भी नहीं हो पाती थी। हेमराज को शराब पीने की आदत कुछ ज्यादा बढ़ गई थी। चौदह वर्ष की गरिमा पिता की आदत और माँ का परिश्रम देखकर सदैव चिंतित रहा करती थी।

हेमराज दिन भर मजदूरी किया करता था जो पैसा मिलता था, शाम को घर लौटते

समय शराब पीकर आता था।

एक दिन गरिमा अपने पिता को समझाती हुई कहती है- पिता जी यदि आप जीना चाहते हैं तो शराब पीना छोड़ दीजिए, शराब एक ऐसी वस्तु है जो कई घरों को बर्बाद कर देता है। घरों की खुशियाँ को छीन लेता है, आप बड़ी मेहनत से चार पैसे कमाते हो उसे भी शराब पीने में खर्च कर देते हैं, आपने माँ के आभूषणों को भी बेच कर शराब पी गए हैं। यदि उसी चार पैसों को आप बचाते तो मैं कुछ पढ़ लेती और अपने भाई-बहन को भी आगे बढ़ा पाती। मुश्किल से अम्मा घर को चलाती हैं। खुद भूखी रहकर हम सब को खिलाती है। पिताजी आज मुझसे यह वादा करो की अब से आप इसे हाथ भी नहीं लगाएंगें। गरिमा के इतना कहने, समझाने पर हेमराज अपनी करनी पर पछताता है और अपने परिवार के साथ-साथ अपना जीवन खुशी से व्यतीत करने लगता है।

इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है शराब एक नशीली पदार्थ के साथ घरों के रौनक को भी छीन लेती है।

एक स्त्री का जीवन

- ममता यादव

एम.ए. प्रथम वर्ष (प्रथम सेमेस्टर)

किन-किन निगाहों से, दो चार होना पड़ता है।
औरत को ताउम्र ही, अखबार होना पड़ता है।।
कभी माँ, कभी बहन, कभी पत्नी, कभी बेटी।
एक चेहरे में कितने ही किरदार होना पड़ता है।।
और अपने हिस्से में, थोड़ा सा सुकून पाने को।
एक औरत को पहले, बीमार होना पड़ता है।।
लब, खामोश मगर, उम्र बोला करती है।
एक औरत को कितना, जिम्मेदार होना पड़ता है।।

***

स्कूल की यादें

- शिवानी गोस्वामी

बी.एस-सी. प्रथम सेमेस्टर

मेरा नाम शिवानी गोस्वामी है आज मैं आप लोगों को इस कहानी के माध्यम से बताऊँगी की जिंदगी का सबसे हसीन पल स्कूल का होता है। यह कहानी मेरे खुद की है जो मैंने कक्षा छः से बारह तक का है तो आइए पढ़ते हैं-

जब मैं कक्षा छः में प्रवेश की तब मेरे लिए सब कुछ नया सा था ऐसा लग रहा था जैसे मैं पहली बार स्कूल आई हूँ क्योंकि मैं उसके पहले एक छोटे स्कूल और बहुत कम बच्चों में पढ़ी थी। जब मैं पहली बार कक्षा में गई तो मुझसे कोई बात नहीं कर रहा था मैं अकेले बैठी थी फिर दो-चार दिन बाद कुछ दोस्त बने और फिर मुझे भी अच्छा लगने लगा मैं भी बहुत खुश थी मेरे अध्यापक हमेशा मेरी दोस्त की तरह रहते थे। मैं उनके बारे में जितना लिखूँ कम है उन्होंने मेरी हमेशा मदद की एक दोस्त की तरह, अध्यापक की तरह, माँ-बाप की तरह हर मोड़ पर साथ दिया। मेरे सारे दोस्त भी हमेशा मेरे साथ रहते थे। स्कूल जाने के बाद ऐसा लगता था जैसे बहुत बड़ी खुशी पा ली हो दोस्तों के साथ घूमना, पढ़ना, खेलना, लड़ना सब बहुत अच्छा लगता था। फिर दस के बाद बहुत सारे दोस्त चले गए लेकिन उनकी यादें थी।

फिर मैंने ग्यारह में गई कुछ दोस्त मैथ से हो गए और कुछ बॉयो से मैं मैथ से थी। मैं अपने क्लास के सब बच्चों से बात करती थी। हम बात-बात पे लड़ते थे बहस करते थे सब मेरा बहुत मजा भी लेते थे। दोस्तो के साथ-साथ अध्यापक भी मेरा मजा लेते थे पर बहुत मजा आता था फिर हम सब बारह में प्रवेश किये इसमें भी बहुत मजे किए। सात साल कैसे बीत गए पता ही नहीं चला अब वो दिन आ गया था जब हमारी स्कूल से विदाई होने वाली थी। वो दिन मैं कभी नहीं भूल पाऊँगी जब सब कुछ मेरा हो के भी ऐसा लगा रहा था सब कुछ छूटने वाला था सबकी आँखें नम थी। आँखों में आँसू था पर सबके चेहरे पर मुस्कान थी सब दिखा रहे थे कि बहुत खुश है पर असल को कोई खुश नहीं था। उस दिन से सब बिछड़ गये बस सबकी यादें रह गई।

''क्लास में मस्ती थी
हमारी भी कुछ हस्ती थी
टीचर का सहारा था
दिल ये आवारा था
कहाँ आ गए इस दुनिया
के चक्कर में
वो स्कूल ही कितना प्यारा था।''

***

मेरी शिक्षा (My Education)

- कृतिका गिरी

बी.एस-सी. प्रथम सेमेस्टर

शिक्षा ही एक ऐसा अनुभव है, जो हमें बहुत कुछ प्रदान करती है। मेरे लिए शिक्षा बहुत आवश्यक है। ये सिर्फ मेरे लिए ही नहीं बल्कि सभी के लिए आवश्यक है। यही एक ऐसी ताकत है जो हमारे सभी इच्छाओं को पूर्ति करने में सहायक है।

''शिक्षा हमें अंगूठा लगाने से लेकर अपना हस्तलेख तक का सफर कराती है।''

हमें जितना भी ज्ञान है वो सब शिक्षा का ही देन है, हमें शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षक जो की सबसे आवश्यक सहायक होते हैं। जिनकी वजह से एक साधारण मानव बहुत कुछ सीख लेता है। यहाँ तक कि जब हम छोटे रहते हैं, हमें कुछ का ज्ञान नहीं रहता है, तब हमारे जीवन का पहला शिक्षक हमारे अभिभावक होते हैं। जो हमें आसान से कठिन सफर (चलना, खाना, पीना इत्यादि) को तय कराते हैं। फिर शिक्षक होते हैं, जो हमें विद्यालय से लेकर जीवन की वो हर एक सफलता को प्राप्त कराते हैं।

''शिक्षा हमारे लिए बहुत आवश्यक है''

''शिक्षा की जड़े कड़वी जरूर होती है लेकिन शिक्षा कि फल मीठे बहुत होते हैं।''

शिक्षा के मामले में हमें कभी भी असफलता से डरना नहीं चाहिए। क्योंकि हम जितना असफल होंगे हमें उतनी

ही सीख मिलेगी। शिक्षा हमें अंधेरे से उजालों में ला देती है, हम जितना शिक्षित होंगे उतनी नहीं जानकारी करा सकेंगे।

शिक्षा हमारे विचार-ध्यान, आचरण को व्यवस्थित करती है। यही हमारे लक्षण की पहचान हमारे होती है।

***

दोहा

- श्रेया कुमारी

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

गुरु गोविन्द दो खड़े काके लागो पाए।
बलिहरि गुरु आपणै गोविन्द दियो बताय।।
ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोय।
औरन को शीतल करै आप हो शीतल होय।।
बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर।
पंथी को छाया नहीं फल लागे अतिदूर।।
नींदक नीयरे राखिये आँगन कुटी छवाय।
बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुहाय।।
दुख में सुमिरन सब करै सुख में करे न कोय।
जो सुख में सुमिरन करे तो दुख काहे होय।।
माटी कहे कुम्हार से तू क्यों रौंदे मोय।
एक दिन ऐसा आएगा मैं रौंदूंगी तोय।।
मेरा मुझमें कुछ नहीं जो कुछ है सो तेरा।
तेरा तुझको सौंपते क्या लागे है मेरा।।
काल करे सो आज करै आज करे सो अब।
पल में परलै होएगी बहुरि करेगी कब।।

***

एक सैनिक की आत्मकथा

- पूजा प्रजापति

बी.ए. प्रथम वर्ष

मैं दुश्मन से नहीं डरता मैं भारत का जवान हूँ
मरूस्थल की रेत हूँ सियाचीन का आसमान हूँ
मैं दुश्मन से नहीं डरता मैं भारत का जवान हूँ
मैं जून में जलती रेत पे लेटे कहता हूँ
गर्मी आज कम है-२ मैं दिसबंर की ठंड पीकर
कहता हूँ सर्दी का मौसम है-२ मैं बर्फ में
नौ दिन तक रहकर जिंदा निकलता हूँ-२
मैं हिंद महासागर के लहरों के कपड़े बदलता हूँ
मैं -३० डिग्री तापमान पर सरहद पर रायफल
टांग के टहलने निकलता हूँ-२ आतंकवाद की
औकात क्या जो मैं कुदरत से नहीं डरता-२
मैं भारत का जवान हूँ मैं दुश्मन से नहीं डरता हूँ-२
मेरी दिवाली में उजाले का ख्याल तक नहीं
मेरी होली में रिश्तों का गुलाल तक नहीं
चाँद और ईद पर तन्हाई में ईजाफा जाता है
मुझे तो राखी बांधने बस एक लिफाफा आता है-२
मेरी माँ के पैर छुए मुझे अरसे हो गये
मेरे पिताजी मेरे याद में घर बैठे बूढ़े हो गये-२
मैंने सहूलियत का गला घोटा अपनी जरूरत तक आरी है
मैंने इस देश के लिए अपनी जान तक वारी है-२
मैं निर्दयी हूँ-२ मैं उजड़ते घर और आंगन से डरता-२
मैं भारत का जवान हूँ मैं दुश्मन से नहीं डरता हूँ-२
मगर मैं डरता हूँ मुझे डर है मेरे सरजमीं को मेरे अपने
उजाड़ेंगे खून की मोहर से खुद को ये संवारेंगे-२
मैं मजबूर हूँ मैं कमजोर हूँ उनसे लड़ नहीं सकता
अपनों की तरफ बंदूक उठा के बढ़ नहीं सकता-२
मैं बोल सकता हूँ मैं बहरों की तरह गूंगा
तुम्हारे कानों पर है हाथ फिर भी मै बोलूंगा कि
हजारों साल की इस सभ्यता को जरा गौर से देखो-२
सुनो आवाज मन की जरा सोंच के देखो-२
क्या तुम्हें लगता है कोई अपना पराया है-२
हुआ पैदा जो इस देश में क्या वो बाहर से आया-२
कुर्बानियां लगी सबकी कि शामिल है खून सबका-२
हमने हड्डियों को जोड़कर हिंदुस्तान बनाया है-२
तुम्हें अगर इश्क है इससे तो दिल से अपनाओ-२
पूछे अगर कोई मजहब तो हिंदुस्तान बतलाओ-२
तोड़ ना पाये किसी अस्त की कोई आंधी-२
जोड़ों ऐसे जड़ों से जिंदगी की जान कहलाओ-२
पहाड़ी वादी नदी घाटी साहील हो या सेहरा हो-२

तिरंगा तीन रंगों मे रंगे दिखता सुनहरा हो-२
जय हिंद जय भारत
जय जवान जय किसान

***

पर्यावरण प्रदूषण

- प्रतिमा
एम.ए. प्रथम सेमेस्टर

पर्यावरण प्रदूषण आज के युग की सबसे गंभीर वैश्विक समस्याओं में से एक है जिसने न केवल प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र को प्रभावित किया है बल्कि मानव जीवन के स्वास्थ्य और सामाजिक संरचना पर भी गहरा असर डाला है। औद्योगीकरण, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि और उपभोक्तावादी संस्कृति में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोदन किया है, जिसके परिणामस्वरूप वायु, जल, भूमि और ध्वनि प्रदूषण में तेजी से वृद्धि हुई है यह प्रदूषण केवल स्थानीय स्तर पर नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर भी जीवन को संकट ग्रस्त कर रहा है।

वायु प्रदूषण वाहनों के धुएँ, औद्योगिक ईकाइयों और जीवाश्म ईंधनों के जलने से अत्यधिक बढ़ रहा है इससे श्वसन सम्बंधी रोग, हृदय रोग और कैंसर जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ रहा है जल प्रदूषण भी एक गंभीर चुनौती है क्योंकि औद्योगिक अपशिष्ट, रासायनिक उर्वरक और प्लास्टिक नदियों और महासागरों को प्रदूषित कर रहे हैं इसका सीधा असर न केवल पीने के पानी की गुणवत्ता पर पड़ता है बल्कि जलीय जीवों और समुद्री पारिस्थितिकी पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है भूमि प्रदूषण ठोस अपशिष्ट रसायनों और प्लास्टिक के अत्यधिक प्रयोग से बढ़ रहा है जिससे कृषि उत्पादन और मिट्टी की गुणवत्ता प्रभावित हो रही है यही ध्वनि प्रदूषण शहरी क्षेत्रों में शोर-शराबे और औद्योगिकी गतिविधियों के कारण मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन में असंतुलन उत्पन्न कर रहा है।

पर्यावरण प्रदूषण का सबसे गंभीर परिणाम जलवायु परिवर्तन के रूप में सामने आ रहा है ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन ने वैश्विक तापमान को बढ़ाया है जिसके कारण हिमनद पीघल रहे हैं जिससे समुद्र का स्तर बढ़ रहा है और असामान्य मौसम की घटनाये सामने आ रही है इसका सीधा प्रभाव कृषि, जैव विविधता और मानव आजीविका पर पड़ता है।

समस्या की गंभीरता को देखते हुए समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है सतत् विकास का सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग इस प्रकार किया जाय जिससे वर्तमान आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके और भविष्य की पीढ़ियों के लिए भी संसाधन सुरक्षित रहे पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम हेतु स्वच्छ ऊर्जा स्रोतों अपशिष्ट प्रबंधन, वृक्षारोपण, पथ संरक्षण और पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा देना आवश्यक है साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, कठोर कानून और स्थानीय समुदायों की सक्रिय भागीदारी भी इस समस्या से निपटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

निष्कर्षत :-

पर्यावरण प्रदूषण केवल एक वैज्ञानिक या तकनीकी चुनौती नहीं है बल्कि यह सामाजिक-नैतिक और मानवीय मुद्दा भी है यदि समय रहते प्रभावी कदम नहीं उठाए गये तो यह मानव सभ्यता के अस्तित्व को ही संकट मे डाल सकता है इसलिए प्रदूषण नियंत्रण केवल सरकारों या संगठनों की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि प्रत्येक नागरिक का नैतिक कर्तव्य है कि वह पर्यावरण संरक्षण में सक्रिय योगदान है।

***

बेटा-बेटी एक समान

- अदिति गोंड़
बी.ए. तृतीय सेमेस्टर

आज के समय में बेटा और बेटी को एक ही समान दर्जा दिया गया है। अगर कोई व्यक्ति इस बात को मानता कि बेटा और बेटी में फर्क है, तो यह बिल्कुल गलत बात होगी, क्योंकि आज हर क्षेत्र में लड़कियाँ आगे निकलती

जा रहीं हैं, और लड़कों को पीछे छोड़ती जा रहीं हैं।

हमारे देश के कुछ महिलाएँ जैसे- कल्पना चावला, इंदिरा गाँधी, मदर टेरेसा, प्रतिभा पाटिल, आदि महिलाओं ने देश में आगे बढ़कर सहयोग किया है।

सभी महिलाओं के जीवन से भी सभी को प्रेरणा लेनी चाहिए और समझना चाहिए कि आज बेटों से बढ़कर बेटियाँ होती दोनों को एक ही समान समझना चाहिए। पहले के समय में लोग बेटियों के प्रति इतने जागरुक नहीं थे। बहुत कम लोगों ने ही पुराने जमाने में बेटियों को पढ़ा लिखा कर सामाजिक कार्यों के लिए आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। लोगों को बदलते हुए समय के साथ जागरूक होना बहुत जरूरी है और हमेशा एक बात मन में रख लेनी चाहिए कि बेटियाँ भी आज बेटों से कम नहीं है।

लोगों को बदलते समय के साथ अपनी सोच बदलने की जरूरत है। बेटा अपने घर का नाम ही रोशन कर सकता है, बेटी दो घरों की नाम रोशन कर सकती हैं। हम सभी ऐसी सोच क्यों रखे, आज लड़कियों के पैर जमीन पर ही नहीं बल्कि अंतरिक्ष में भी पहुँच चुके हैं। प्राचीन इतिहास में हमारे देश में बहुत बड़ी-बड़ी वीरांगनाओं ने जन्म लिया है।

जैसे- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होल्कर, सावित्रीबाई फूले, आदि सभी महिलाओं ने देश के उत्थान में बढ़कर भाग लिया, और हमारे देश का नाम रोशन किया।

***

माता-पिता

- माधुरी गोंड़

बी.ए. पंचम सेमेस्टर

हमारे जिंदगी में माता-पिता अनमोल उपहार की तरह होते हैं। जिसकी कोई कीमत नहीं होती है। माता-पिता के बिना हमारे जीवन का कोई अर्थ नहीं होता, अगर भगवान के बाद, दूसरा स्थान किसी को दिया जाता है, तो वह हमारे माता-पिता को दिया जाता है। माता-पिता के बिना हम अपने जीवन की कल्पना नहीं कर सकते। हमको इस दुनिया में लाने वाले हमारे माता-पिता ही होते हैं। माता-पिता द्वारा हमारे जीवन में बचपन से लेकर बड़े होने तक माता-पिता बहुत भूमिकाएँ निभाते हैं। वह हमें बहुत प्यार करते हैं। भले ही हम कितने भी बड़े हो जाएँ, लेकिन उनकी नजर में हमेशा बच्चे ही रहते हैं। दुनिया की हर रिश्ते में आपको झूठ बेइमानी देखने को मिल सकती है। पर माँ-बाप का रिश्ता निस्वार्थ होता है। हमेशा अपने बच्चों को भलाई में ही उनकी पूरी जिंदगी निकल जाती है।

माता-पिता हमारे लिए बहुत से कार्य करते हैं। हमारे जीवन में आने वाली मुसीबतों को वह अपने ऊपर ले लेते हैं। जीवन की किसी भी बड़ी से बड़ी कठिनाइयों को हम अपने माता-पिता के आशीर्वाद से आसानी से पार कर लेते हैं। माता-पिता हमें बहुत अच्छे संस्कार प्रदान करते हैं। और जीवन में हमेशा आगे बढ़ने की सही राह दिखाते हैं। सही शब्दों में वह हमारे अच्छे और सच्चे मार्गदर्शक भी होते हैं।

अगर कोई मुझसे ये पूछे कि भगवान ने तुम्हें सबसे अच्छी चीज कौन सी दी है। तो मैं कहूँगी कि मेरे माता-पिता हैं। ये मेरा सौभाग्य है कि माता-पिता के रूप में मुझे भगवान मिले हैं जो मेरी उँगली पकड़कर मुझे जीवन की राह दिखाते हैं।

***

शायरी

- माधुरी गोंड़

बी.ए. पाँचवाँ सेमेस्टर

तकदीर लिखने वाले एक एहसान कर देना मेरे
माता-पिता के तकदीर में एक मुस्कान लिख देना
मिले ना दर्द उन्हें जिंदगी में चाहे तो उनकी
किस्मत मे मेरी जान लिख देना।

***

बचपन की यादें

- सपना गोंड़
बी.ए. पाँचवाँ सेमेस्टर

वो खुशियों का जमाना था,
सबका प्यार खजाना था,
किसी चीज की कमी न थी,
आँसू से सब कुछ पाना था,
पिता के मार से बचना था,
तब माँ का पल्लू सिक्योरिटी गार्ड था।
खबर न थी कुछ सुबह की,
ना शाम का ठिकाना था,
थक कर आते थे स्कूल से,
फिर भी खेलने जाना था।
माँ की कहानी थी,
परियों का फंसाना था।
बारिश में कागज की नाव थी,
हर मौसम सुहाना था।

***

एक पिता की कहानी.....

- खुशबू प्रजापति
बी.ए. द्वितीय वर्ष (तृतीय सेमेस्टर)

एक छोटे से गाँव का एक आदमी जिसका नाम कालीचरन है, जिसके सपने बहुत बड़े थे। खुद ने पढ़ाई बीच में छोड़ दी थी, लेकिन दिल में बस एक ही ख्वाहिश थी -

''मेरे बच्चे कभी मेरे जैसे अधूरे न रह जाए।''

सुबह ५ बजे उठकर खेत में मेहनत करते, दोपहर में मजदूरी और रात को थका हुआ शरीर लेकर भी बच्चों की चिंता करता और छाले पड़े हाथ लेकर बच्चों की कॉपिया चेक करता।

उसके हाथों में जख्म भरे छाले थे, लेकिन जब बच्चों के हाथों में पेन देखता तो मुस्कुरा देता। कई बार जेब खाली रहती, लेकिन बच्चों की फीस कभी लेट नहीं होने दी। अपनी जरूरतें पीछे छोड़ दी- न नए कपडे, न आराम, सिर्फ बच्चों का भविष्य ही उसकी सबसे बड़ी खुशी बन गया।

धीरे-धीरे उम्र और तकलीफें बढ़ने लगी, लोग ताना देते और बोलते ''इतनी मेहनत क्यों करता है?'' लेकिन वो बस इतना कहते- ''अगर मेरे बच्चे कामयाब हो गये और ऐसे ही हँसते रहेंगे, तो मेरी थकान ही मेरी दौलत है।''

आज भी कई बार चुपचाप रो लेते हैं, ताकि घरवाले देख न लें। क्योंकि पापा के आँसू भी हमेशा छुपे रहते हैं।

बच्चा- ''पापा, आपके हाथ हमेशा खुरदरे क्यों है।''

पापा (मुस्कुरा कर)

''क्योंकि बेटा, ये हाथ तुम्हारे सपनों को मुलायम बनाने में लगे रहते हैं।''

पैरों में चप्पल टुटी थी,
लेकिन किताबे नई दिलाई।
पेट आधा भरता रहा,
पर थाली हमारी पूरी सजाई।।
थक जाता था, पर रुकता नहीं,
गिर जाता था, पर झुकता नहीं।
वो पापा हैं.....
जिसके सपने खुद के लिए नहीं,
सिर्फ अपने बच्चो के लिए हैं।।
सपनों की म्डप् चुका रहा है,
ख्वाहिशों को दबा रहा है।
आज का पापा...
अपने लिए नहीं,
बस अपने बच्चों के पढ़ाई के लिए कमा रहा है।

***

मेरी प्रिय शिक्षिका - सीमा राय

- अनिशा यादव

बी.ए. प्रथम सेमेस्टर

प्रस्तावना:-

शिक्षक हमारे जीवन के मार्गदर्शक होते हैं। वे न केवल हमें पाठ्यक्रम की जानकारी देते हैं, बल्कि जीवन के मूल्यों को भी सिखाते हैं श्री राम बरनदास इण्टर कॉलेज, भुड़कुड़ा, गाजीपुर में पढ़ते हुए मुझे यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि मेरी कक्षा १२ की हिंदी अध्यापिका सीमा मैडम हैं, जिनका व्यक्तित्व, स्वर और शिक्षण शैली मेरे हृदय में एक विशेष स्थान रखती हैं।

व्यक्तित्व और सौम्यता:-

सीमा मैडम जी का स्वभाव अत्यंत मधुर, विनम्र और प्रेरणादायक है। उनकी आवाज बहुत प्यारी है- नर्म, शुद्ध और स्पष्ट जब वह बोलती हैं तो लगता है मानों शब्दों में संगीत बह रहा हो। उनका पहनावा और व्यक्तित्व हमेशा सजीला और आकर्षक होता है, जिससे उनका आत्मविश्वास झलकता है।

शिक्षण शैली:-

उनका पढ़ाने का तरीका अनोखा और बहुत प्रभावशाली है। वे कठिन विषयों को सरल भाषा में समझाती हैं और हर छात्र की जिज्ञासा का सम्मान करती हैं वह सिर्फ पाठ्यक्रम तक सीमित नहीं रहतीं बल्कि साहित्य गहरे अर्थ, जीवन से जुड़ी सीख और नैतिक मूल्यों पर भी प्रकाश डालती है।

प्रेरणा स्त्रोत:-

सीमा मैडम जी न केवल एक शिक्षिका हैं बल्कि एक मार्गदर्शक भी हैं। उन्होंने मुझे भाषा से प्रेम करना सिखाया, और यह समझाया कि साहित्य केवल किताबों तक सीमित नहीं, बल्कि यह जीवन के हर पहलू में उतरता है।

निष्कर्ष:-

सीमा मैडम जी जैसी शिक्षिका पाना एक सौभाग्य की बात है। वे एक आदर्श शिक्षिका हैं जिनसे न सिर्फ पढ़ाई होती है बल्कि जीवन जीने की सीख भी मिलती है। मैं स्वयं को मैं भाग्यशाली मानती हूँ कि मुझे भुड़कुड़ा, गाजीपुर में उनकी शिष्या होने का अवसर मिला।

***

मेरे कॉलेज का पहला दिन

- खुशी यादव

बी.एस-सी. प्रथम वर्ष

मेरे कॉलेज का नाम- श्री महंथ रामाश्रय दास स्नातकोत्तर महाविद्यालय भुड़कुड़ा, गाजीपुर।

कॉलेज का मेरा पहला दिन था, प्रातः ९ः०० बजे मैं कॉलेज पहुँची, मुझे उत्साह के साथ-साथ डर भी लग रहा था, वहाँ आने वाले सभी छात्र-छात्राओं को देखकर मन प्रफुल्लित हो गया। कॉलेज के हरे-भरे मैदानों ने मेरा मन मोह लिया। आगे मुझे एक अध्यापक मिले, उन्होंने मुझसे पूछा- आओ बेटा, कौन-सी कक्षा में हो? मैंने उन्हें नमस्कार किया तथा अपनी कक्षा में पहुँच गयी। कक्षा में लगभग २०-३० छात्र-छात्राएँ थे। अन्दर सभी अपने बातों में लगे थे। सभी एक-दूसरे को जानते थे परन्तु मैं नई थी।

अतः उन्होंने मुझे जिज्ञासा भरी नजरों से देखा। एक बेंच खाली देखकर मैं बैठ गयी। एक अन्य विद्यार्थी भी वहाँ बैठ गया, फिर हमारा परिचय हुआ। कुछ समय बाद अन्य छात्रों से भी परिचय हो गया।

सबने मेरे साथ दोस्ती की तथा अपना लंच भी आपस में बाँटा। मैंने सभी अध्यापकों की बात ध्यान से सुनी।

सभी ने मेरा परिचय और मेरे परिवार के बारे में पूछा। मुझे अपना नया कालेज बहुत अच्छा लगा।

***